ISSN: 2348-3083
SJIF 2016 : 4.44
UGC APPROVED SR. NO. 48612
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR
HUMANITY SCIENCE & ENGLISH LANGUAGE

वेद का महत्व

पल्लवी सिंह, Ph. D.

वरिष्ठ प्रवक्ता (संस्कृत), के.आर.महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मथुरा

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

अपने प्रातिभचक्षु के सहारे साक्षातकृत धर्म ऋषियों के द्वारा अनुभूत अध्यात्मशास्त्र के तत्त्वों की विशाल विमल शब्दराशि का ही नाम वेद है। जैसे लौकिक वस्तु के साक्षात्कार के लिए नेत्र की आवश्यकता है। उसी प्रकार अलौकिक तत्त्वों के रहस्य को जानने के लिए वेद की उपादेयता है। इष्ट प्राप्ति तथा अनिष्ठ परिहार के अलौकिक उपाय को बतलाने वाला ग्रंथ वेद ही है। भारतीय बने रहने के लिए भारतीयों विशेषतः धर्मावलम्बी के लिए वेदों से परिचित होना नितान्त आवश्यक है। व्यक्ति के जन्म पूर्व से लेकर मृत्युपर्यन्त होने वाले सोलह संस्कारों का अत्यधिक महत्व है। जिनका संपादन वेदों के बिना कदापि संभव नहीं है। हमारी दैनिक प्रार्थना हमारे देवी देवता, हमारी उपासना, हमारे अनुष्ठान, हमारे यज्ञ, हमारे पर्व, हमारी मान्यताएँ और हमारी परंपराएँ सभी वेदों से प्रभावित है। परम धार्मिक श्री लोकमान्य तिलक ने हिन्दू धर्म का रक्षक ही प्रमाण्य बुद्धिर्वेदेषु किया है। अर्थात् हिन्दू वही है जो वेदों की प्रमाणिकता को स्वीकार करता है। अतः संक्षिप्ततः हम यह कह सकते हैं कि वेद हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति का मूल आधार और मूल स्तम्भ है।

विविध दृष्टिकोणों से देखने पर वेदों के जिस महत्व से हमारा साक्षात्कार होता है उसे हम क्रमशः इस प्रकार स्पष्ट कर सकते हैं।

धार्मिक दृष्टि से वेदों का महत्व – मनु ने अपने ग्रंथ में वेदों को सभी धर्मों के मूल के रूप में स्वीकार किया है। वेदः अखिलोधर्म मूलम् – मनुस्मृति ।[2] वेद ज्ञान के वे मानसरोवर हैं जहाँ से ज्ञान की विमल धारा विभिन्न मार्गों में बहकर भारत ही नहीं प्रत्युत्त समस्त विश्व को उर्बर बनाती है। हमारे पूर्वज किस प्रकार अपना जीवन विताते थे? कौन सी क्रीडाएँ उनका मनोरंजन करती थीं, किस प्रकार वैवाहिक सम्बन्ध देह सम्बन्ध का प्रतीक न होकर आध्यात्मिक संयोग का प्रतिनिधि माना जाता था, किन देवताओं की उपासना उनके द्वारा की जाती थी, इन सभी प्रश्नों का उत्तर हमें वेदों से प्राप्त होता है। श्रुतियों

की सहायता से भारतीय दर्शनों के विविध विकास को हम भली भाँति समझ सकते हैं। रामानुजम के विशिष्टाद्वैत, निम्बार्क के द्वैताद्वैत, मध्वाचार्य के द्वैत वल्लभ के शुद्धाद्वैत, चैतन्य के अचिन्त्यभेदाभेद के रहस्योद्घाटन के अभिलाषी है तो हमारे लिए उपनिषद का गहन मनन और पर्यालोचन ही अनन्य साधन है। आर्यों के प्राचीन ग्रंथ वेद की उपयोगिता आज भी बनी हुई है। हमारी उपासना के भाजन देवगण, हमारे संस्कारों की दशा बतलाने वाली पद्वति हमारी मस्तिष्क को प्रेरित करने वाली विचारधारा इन सभी का उद्भव है, वेद। मानव जाति के प्राचीन इतिहास रहन–सहन, आचार विचार की जानकारी के लिए वेद आदरणीय हैं। मानवजाति के विचारों के गौरवमय ग्रँथ में यह सबसे प्राचीन है। अतः अतीतकाल में मानवों के व्यवहार तथा विचार का पता इन अमूल्य ग्रंथ रत्नों के पर्यालोचना से भलीभाँति लग सकता है।

ज्ञान की दृष्टि से वेद का महत्व :

विद् ज्ञाने धातु से निष्पन्न होने के कारण वेद शब्द का अर्थ ही ज्ञान है। मनु ने "सर्वज्ञानमयो हि सः" कहकर वेद को सभी प्रकार के ज्ञान से युक्त बतलाया है। वेद में तीनों लोक, चारों वर्ण, चारों आश्रम यहाँ तक की भूत, भवत् (वर्तमान) और भविष्य सभी का ज्ञान विन्दु वेद है। चातुर्वण्यं त्रयो लोकाश्चत्वारश्चाश्रमाः पृथक।

भूतं भव्यं भविष्यं च सर्वं वेदान्त प्रसिहमति ।

(मनुस्मति)

अतः वेद की महत्ता सर्वव्यापी, सर्वप्रकाशित है। अतः इसका अनुशीलन भारतीय जीवन में ज्ञान की दृष्टि से परम महत्वपूर्ण है।

साहित्य की दृष्टि से वेद का महत्व :

समस्त विषयों स्त्रोत वेदों को ही माना जाता है। काव्य दर्शन धर्मशास्त्र व्याकरण इत्यादि सभी क्षेत्रों में वेद की छाप स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। "कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः" आदि वेद वाक्यों में वैदिक ऋषियों को कवि ही माना गया है और समग्र संसार को वेद का काव्य कहा गया है। पश्य देवस्य काव्यम्।

वस्तुतः वेद के मन्त्रद्रष्टा कवि संसार के सर्वप्रथम कवि थे। ऋग्वेद का विविध स्थल काव्यात्मक अभिव्यक्तियों से अनुरंजित है। ऊषा विषयक मंत्र में देवी के कमनीय सुषमा का देवताओं के स्वरूप वर्णन का जिसमें इन्द्र अग्नि वरुण और वाक् सूक्तों में काव्यात्मकता का पूर्ण निदर्शन है। ऋग्वेद के सृष्टि सूक्त दो कवियों के असाधारण काल्पनिक प्रतिमा का अनुमान लगा सकते हैं। यहाँ कवि की भाषा, उपमा, रूपक छन्द और अलंकार का विलक्षण प्रयोग अत्यंत मार्मिक एवं उत्कृष्ट है। विशेषकर छन्दों में गायत्री त्रिष्टुप और जगती आदि छन्द प्रमुख है। दर्शन के क्षेत्र मे जीवेश्वर सम्बन्ध संसार का स्वरूप

प्रेत्यभाव परमेश्वर इत्यादि के निरुपण ऋग्वेद से ही उपक्रान्त होता है। यहीं सर्वप्रथम हम आर्यों के आचार–विचार से परिचित होते हैं। इस प्रकार वेद भारतीय काव्य उपवन के प्रथम अंकुर है और बाद का सारा काव्य इन्हीं से पल्लवित सा हुआ है।

भारतीय दर्शन की दृष्टि से वेद का महत्व :

भारतीय दर्शन का मूल उत्स वेद है। आस्तिक दर्शन तो वेदों के मंत्रों का मूल स्तम्भ है किन्तु नास्तिक दर्शन तो वेदों की विचारधारा की प्रक्रिया स्वरूप ही प्रादुर्भूत हुए है। भारत का संपूर्ण प्राचीन दर्शन गौतम बुद्ध के पूर्व ही प्रकाश में आ चुका था। उसी को आधार बनाकर उसकी प्रक्रिया ही बौद्ध दर्शन में सामने आई। जैन दर्शन का विकास भी इसी प्रकार हुआ। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि श्रुतियों की सहायता से ही भारतीय दर्शनों के विविध विकास को हम भलीभाँति समझ सकते हैं। उपनिषद में समग्र आस्तिक और नास्तिक दर्शन के तत्वों की बीजरुपेण उपलब्धि होती है। सांख्य नैयायिक, मीमांसा, वैशेषिक और वेदान्त आदि भारतीय वैदिक दर्शनों का तथा बौद्ध, जैन, चार्वाक आदि सभी अवैदिक दर्शनों का आधार वेद ही है।

भाषाशास्त्रीय की दृष्टि से वेद का महत्व :

वेद में विशेष रूप से ऋग्वेद के प्राचीन सूत्रों में प्रयुक्त वैदिक भाषा विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में एक है। उन्नीसवी शताब्दी के मध्य भाग में भाषा विज्ञान के प्रतिष्ठापन का सर्वाधिक श्रेय संस्कृत भाषा को जाता है। यूरोपीय भाषाविदों में मूलभाषा के विषय में प्रारंभ में पर्याप्त मतभेद था जैसे इसाई हिब्रूभाषा का मुसलमान अरबी भाषा को कोई लैटिन भाषा को तो कोई ग्रीक को आदिभाषा के रूप में मानते थे। परंतु संस्कृत की उपलब्धता होने पर इन सभी विवादों का अंत हो गया। वेदों के अध्ययन से संस्कृत की प्राचीनता का परिणाम फलीभूत होता है। दूसरे यूरोप की उपलब्ध अन्य लैटिन ग्रीक आदि भाषाओं से वैदिक भाषा की तुलना करने पर एक नवीन विज्ञान का श्रीगणेश हुआ। इसी को आगे चलकर तुलनात्मक भाषा विज्ञान के नाम से जानते हैं। भाषा विज्ञान की दृष्टि से वेदों का महत्व असंदिग्ध रूप से स्वीकार किया गया है।

संस्कृति की दृष्टि से वेद का महत्व :

आर्य की संस्कृति और सभ्यता को जानने का एकमात्र आधार वेद है। प्राचीन ऋषियों के विचारों का संग्रह उनकी जीवन पद्धति का विस्तृत विवेचन वेदों में उपलब्ध है। ये केवल आर्यों के विषय में नहीं अपितु प्राचीन संस्कृति को जानने का एकमात्र आधार सर्वप्राचीन एवं उपलब्ध और सर्वसम्मत साधन भी वेद ही ळें

विज्ञान की दृष्टि से वेद का महत्व :

वेद के तथ्यों में आधुनिक विज्ञानों से भी उदात्ततर वैज्ञानिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन है। जैसे वेदों के विविध रूपों का जिस प्रकार विज्ञान युग में विद्युत शक्ति का महत्व है, इसी प्रकार ये वैदिक युग में प्राणशक्ति के महत्व को प्रकाशित किया गया है। विविध वैज्ञानिक तथ्यों का प्रतिपादन है जैसे पच्चभूत सिद्धान्त जिसके आधार पर पृथ्वी, जल, वायु, तेज और आकाश इनका मूल्यतः एक ही तत्व से विकास हुआ है। पश्चिमी देशीय विद्वान जल की उत्पत्ति हाइड्रोजन और आक्सीजन से मानते हैं (वेदों में) वैदिक विज्ञान में अग्नि एवं सोम का मिश्रण मानते हैं, वस्तुतः यह भाषा विभेद से उत्पन्न तथ्य है अन्यथा अर्थ तो समान ही है।

शतपथ ब्राह्मण में वेदों से सृष्टि की उत्पत्ति का वर्णन करते हुए स्पष्ट लिखा गया है यजु 'यत्' और 'जू' दो शब्दों के सम्बन्ध में बना है। युत् का अर्थ है निरन्तर चलनशील और जूः का अर्थ है स्थिर। शतपथ श्रुति के अनुसार इन्हीं से सभी तत्वों का निर्माण हुआ है। इन तत्वों को आज साइंस इलेक्ट्रान प्रोटॉन कहता है।

सबसे आश्चर्य की बात है कि आज भी जिन तत्वों पर पश्चिमी वैज्ञानिकों को संदेह है, उनका समाधान भारतीय वैदिक ऋषियों ने आज से लाखों वर्ष पूर्व कर लिया था।

इस प्रकार वेद अध्यात्म ईश्वरीय ज्ञान, विज्ञान, कला, भारतीय संस्कृति , सभ्यता, धर्म और ज्ञान का मूल उत्स और प्रकाश स्थल है। वह भारतीय नहीं जिसे वेदों की महत्ता स्वीकार नहीं। इस प्रकार वेद ज्ञान के अक्षय और अमिट भण्डार है जिसे सहजतः आत्मसात करना हमारा पुण्य कर्तव्य है।

संदर्भ सूची –

मनुस्मृति
वैदिक साहित्य का इतिहास–बलदेव उपाध्याय
भारतीय धर्म और दर्शन – बलदेव उपाध्याय
संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास–डॉ बाबू लाल त्रिपाठी